२. ताई

– विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक'

श्रवणीय भक्त सूरदास जी का 'वात्सल्य' रस वाला कोई पद सुनिए और आशय सुनाइए ।

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

- इसके कठिन शब्द तथा पक्तियाँ कहलावाएँ ।
- पद में वर्णित भाव बताने के लिए कहें ।
- पद का सरल अर्थ सुनाने के लिए प्रेरित करें ।

''ताऊ जी, हमें लेलगाड़ी (रेलगाड़ी) ला दोगे ?'' कहता हुआ एक पंचवर्षीय बालक बाबू रामजीदास की ओर दौड़ा । बालक बोला–''उसमें बैठकर बली दूल जाएँगे । हम बी जाएँगे, चुन्नी को बी ले जाएँगे । बाबू जी को नहीं ले जाएँगे । हमें लेलगाड़ी नहीं ला देते । ताऊ जी तुम ला दोगे, तो तुम्हें ले जाएँगे ।'' बाबू–''और किसे ले जाएगा ?'' पास ही बाबू रामजीदास की अर्द्धांगिनी बैठी थीं । बाबू साहब ने उनकी ओर इशारा करके कहा–''और अपनी ताई को नहीं ले जाएगा ?'' बालक कुछ देर तक अपनी ताई की ओर देखता रहा । ताई जी उस समय कुछ चिढ़ी हुई-सी बैठी थीं । बालक को उनके मुख का वह भाव अच्छा न लगा । अतएव वह बोला–''ताई को नहीं ले जाएँगे ।''

ताई जी सुपारी काटती हुई बोलीं–''अपने ताऊ जी ही को ले जा मेरे ऊपर दया रख ।'' ताई ने यह बात बड़ी रुखाई के साथ कही । बालक ताई के शुष्क व्यवहार को तुरंत ताड़ गया । बाबू साहब ने फिर पूछा–''ताई को क्यों नहीं ले जाएँगा ?''

बालक–''ताई हमें प्याल (प्यार), नहीं कलतीं ।''

बाबू – ''जो प्यार करें तो ले जाएगा ?''

बालक ने ताऊ जी को प्रसन्न करने के लिए केवल सिर हिलाकर स्वीकार कर लिया परंतु मुख से कुछ नहीं कहा । बाबू साहब उसे अपनी अर्द्धांगिनी के पास ले जाकर उनसे बोले–''लो, इसे प्यार कर लो तो तुम्हें ले जाएगा ।''

मनोहर ने ताऊ की बात का उत्तर नहीं दिया । उधर ताई ने मनोहर को अपनी गोद से ढकेल दिया । मनोहर नीचे गिर पड़ा । शरीर में तो चोट नहीं लगी, पर हृदय में चोट लगी । बालक रो पड़ा । मनोहर के चले जाने पर बाबू रामजीदास रामेश्वरी से बोले–''तुम्हारा यह कैसा व्यवहार है ? बच्चे को ढकेल दिया । जो उसे चोट लग जाती तो ?''

रामेश्वरी मुँह मटकाकर बोली–''लग जाती तो अच्छा होता । क्यों मेरी खोपड़ी पर लादे देते हो ? आप ही मेरे ऊपर डालते हो और आप ही अब ऐसी बातें करते हैं ।''बाबू साहब कुढ़कर बोले–''इसी को खोपड़ी पर लादना कहते हैं ?''

परिचय

जन्म : सन १८९९ अंबाला (पंजाब)

मृत्यु : १९४५

परिचय : आपको हिंदी, संस्कृत, फारसी, उर्दू, बंगाली भाषाओं का अच्छा ज्ञान था । प्रख्यात कहानीकार, उपन्यासकार 'कौशिक' जी ने अपनी कहानियों में पात्रों के चरित्र निर्माण में मनोविज्ञान का आधार लिया है ।

प्रमुख कृतियाँ : खोटा-बेटा, पेरिस की नर्तकी, साध की होली, चित्रशाला, मणिमाला, कल्लोल (कहानी संग्रह) माँ, भिखारिणी (उपन्यास) आदि ।

गद्य संबंधी

संवादात्मक कहानी : किसी विशेष घटना की रोचक ढंग से संवाद रूप में प्रस्तुति संवादात्मक कहानी कहलाती है ।

इस कहानी में कौशिक जी ने एक नारी के स्वयं के पुत्र की चाहत, उसकी निष्ठुरता फिर उसके हृदय परिवर्तन को बड़े ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है ।

रामेश्वरी –''और नहीं तो किसे कहते हैं ? तुम्हें तो अपने आगे और किसी का दुख-सुख सूझता ही नहीं । न जाने कब किसका जी कैसा होता है । तुम्हें उन बातों की कोई परवाह ही नहीं, अपनी चुहल से काम है ।''

बाबू–''बच्चों की प्यारी बातें सुनकर तो चाहे जैसा जी हो, प्रसन्न हो जाता है । मगर तुम्हारा हृदय न जाने किस धातु का बना हुआ है ?''

रामेश्वरी –''तुम्हारा हो जाता होगा । और होने को होता है, मगर वैसा बच्चा भी तो हो । पराये धन से भी कहीं घर भरता है ?''

बाबू साहब कुछ देर चुप रहकर बोले–''यदि भतीजा पराया धन कहा जा सकता है, तो फिर मैं नहीं समझता कि अपना धन किसे कहेंगे ?''

बाबू रामजीदास धनी आदमी हैं । कपड़े की आढ़त का काम करते हैं। लेन-देन भी है । इनसे एक छोटा भाई है उसका नाम है कृष्णदास । दोनों भाइयों का परिवार एक ही है ।

रामजीदास निस्संतान हैं । कृष्णदास की दो संतानें हैं । एक पुत्र-वही पुत्र, जिससे पाठक परिचित हो चुके हैं- और एक कन्या है चुन्नी । कन्या की आयु दो वर्ष के लगभग है ।

रामजीदास अपने छोटे भाई और उनकी संतान पर बड़ा स्नेह है कि उसके प्रभाव से उन्हें अपनी संतानहीनता कभी खटकती ही नहीं ।

परंतु रामजीदास की पत्नी रामेश्वरी को अपनी संतानहीनता का बड़ा दुख है । वह दिन-रात संतान ही के सोच में घुली रहती है ।

रात के भोजन आदि से निवृत्त होकर रामजीदास शैया पर लेटे शीतल और मंद वायु का आनंद ले रहे हैं । पास ही दूसरी शैया पर रामेश्वरी, हथेली पर सिर रखे, किसी चिंता में डूबी हुई थीं । बाबू साहब ने अपनी स्त्री की ओर करवट लेकर कहा–''आज तुमने मनोहर को बुरी तरह ढकेला था कि मुझे अब तक उसका दुख है ।''

रामेश्वरी बोली–''तुम्हीं ने मुझे ऐसा बना रखा है । उस दिन उस पंडित ने कहा कि हम दोनों के जन्मपत्री में संतान का जोग है और उपाय करने से संतान हो सकती है । उसने उपाय भी बताए थे, पर तुमने उनमें से एक भी उपाय करके न देखा ।''

बाबू साहब हँसकर बोले–''तुम्हारी जैसी सीधी स्त्री भी क्या कहूँ ?'' तुम बात तो समझती नहीं, अपनी ही ओटे जाती हो।'' रामेश्वरी –''अच्छा, एक बात पूछती हूँ । भला तुम्हारे जी में संतान का मुख देखने की इच्छा क्या कभी नहीं होती ?''

इस बार रामेश्वरी ने बाबू साहब के हृदय का कोमल स्थान पकड़ा । वह कुछ देर चुप रहे । तत्पश्चात एक लंबी साँस लेकर बोले–''भला ऐसा कौन मनुष्य होगा, जिसके हृदय में संतान का मुख देखने की इच्छा न हो ? परंतु क्या किया जाए ?''

पठनीय

लेखक सियारामशरण गुप्त की 'काकी' कहानी पढ़िए तथा उसके प्रमुख पात्रों की विशेषताएँ लिखिए ।

विषय से...

आपके परिवार के किसी वेतनभोगी सदस्य की वार्षिक आय की जानकारी लेकर उनके द्वारा भरे जाने वाले आयकर की गणना कीजिए ।

नौवीं कक्षा, गणित, भाग-१ पृष्ठ १००

जब नहीं है और न होंगे की कोई आशा ही है, तब उसके लिए व्यर्थ चिंता करने से क्या लाभ ? इसके सिवा जो बात अपनी संतान से होती, वही भाई की संतान से हो भी रही है । जितना स्नेह अपनों पर होता, उतना ही इन पर भी है जो आनंद उसकी बाल क्रीड़ा से आता, वही इनकी क्रीड़ा से भी आ रहा है । फिर नहीं समझता कि चिंता क्यों की जाय ।''

रामेश्वरी कुढ़कर बोली-''तुम्हारी समझ को मैं क्या कहूँ ? इसी से तो रात-दिन जला करती हूँ, भला यह तो बताओ कि तुम्हारे पीछे क्या इन्हीं से तुम्हारा नाम चलेगा ?''

बाबू साहब हँसकर बोले-''अरे, तुम भी कहाँ की क्षुद्र बातें लाई । नाम संतान से नहीं चलता । नाम अपनी सुकृति से चलता है । तुलसीदास को देश का बच्चा-बच्चा जानता है । सूरदास को मरे कितने दिन हो चुके । इसी प्रकार जितने महात्मा हो गए हैं, उन सबका नाम क्या उनकी संतान की बदौलत चल रहा है ? सच पूछो, तो संतान से जितनी नाम चलने की आशा रहती है, उतनी ही नाम डूब जाने की संभावना रहती है, परंतु सुकृति एक ऐसी वस्तु है, जिसमें नाम बढ़ने के सिवा घटने की आशंका रहती ही नहीं । हमारे शहर में राय गिरधारीलाल कितने नामी थे । उनके संतान कहाँ है । पर उनकी धर्मशाला और अनाथालय से उनका नाम अब तक चला आ रहा है, अभी न जाने कितने दिनों तक चला जाएगा ।

ममत्व से प्रेम उत्पन्न होता है, और प्रेम से ममत्व । इन दोनों का साथ चोलीदामन का-सा है । ये कभी पृथक नहीं किए जा सकते । शाम का समय था । रामेश्वरी खुली छत पर बैठी हवा खा रही थी । पास उनकी देवरानी भी बैठी थी । दोनों बच्चे छत पर दौड़-दौड़कर खेल रहे थे । रामेश्वरी उनके खेल को देख रही थी । इस समय रामेश्वरी को उन बच्चों का खेलना-कूदना बड़ा भला मालूम हो रहा था । हवा में उड़ते हुए उनके बाल, कमल की तरह खिले उनके नन्हे-नन्हे मुख, उनकी प्यारी-प्यारी तोतली बातें, उनका चिल्लाना, भागना, लौट जाना इत्यादि क्रीड़ाएँ उसके हृदय को शीतल कर रहीं थीं । सहसा मनोहर अपनी बहन को मारने दौड़ा हुआ आया और वह भी उन्हीं की गोद में जा गिरा रामेश्वरी उस समय सारा द्वेष भूल गई । उन्होंने दोनों बच्चों को उसी प्रकार हृदय से लगा लिया, जिस प्रकार वह मनुष्य लगाता है जो कि बच्चों के लिए तरस रहा हो । उन्होंने बड़ी सतृष्णता से दोनों को प्यार किया । उस समय यदि कोई अपरिचित मनुष्य उन्हें देखता तो उसे यह विश्वास होता कि रामेश्वरी उन बच्चों की माता है ।

दोनों बच्चें बड़ी देर तक उसकी गोद में खेलते रहे । सहसा उसी समय किसी के आने की आहट पाकर बच्चों की माता वहाँ से उठकर चली गई ।

''मनोहर, ले रेलगाड़ी ।'' कहते हुए बाबू रामजीदास छत पर आए । उनका स्वर सुनते ही दोनों बच्चे रामेश्वरी की गोद से तड़पकर निकल भागे ।

मौलिक सृजन

जिस व्यक्ति ने आप को सर्वाधिक प्रेरित किया है, उसके व्यक्तित्व की विशेषताएँ लिखिए ।

स्वमत

'आज के बच्चे कल का भविष्य', इस बारे में स्वमत लिखिए ।

रामजीदास ने पहले दोनों को खूब प्यार किया, फिर बैठकर रेलगाड़ी दिखाने लगे । पति को बच्चों में मगन होते देखकर उसकी भौहें तन गईं । बच्चों के प्रति हृदय में फिर वही घृणा और द्वेष भाव जाग उठा ।

बच्चों को रेलगाड़ी देकर बाबू साहब रामेश्वरी के पास आए और मुस्कराकर बोले–''आज तो तुम बच्चों को बड़ा प्यार कर रही थीं । इससे मालूम होता है कि तुम्हारे हृदय में भी उनके प्रति कुछ प्रेम अवश्य है ।''

रामेश्वरी को पति की यह बात बहुत बुरी लगी । उसे अपनी कमजोरी पर बड़ा दुख हुआ । केवल दुख ही नहीं, अपने ऊपर क्रोध भी आया । वह दुख और क्रोध पति के उक्त वाक्य से और भी बढ़ गया । उसकी कमजोरी पति पर प्रगट हो गई, यह बात उसके लिए असह्य हो उठी ।

रामजीदास बोले–''इसीलिए मैं कहता हूँ कि अपनी संतान के लिए सोच करना वृथा है । यदि तुम इनसे प्रेम करने लगो, तो ये ही अपनी संतान प्रतीत होने लगेंगे । मुझे इस बात से प्रसन्नता है कि तुम इनसे स्नेह करना सीख रही हो ।''

यह बात बाबू साहब ने नितांत हृदय से कही थी परंतु रामेश्वरी को व्यंग्य की गंध मालूम हुई । उन्होंने कुढ़कर मन में कहा–''इन्हें मौत भी नहीं आती । मर जाएँ, पाप कटे ! आठों पहर आँखों के सामने रहने से प्यार को जी ललचा ही उठता है । इनके मारे कलेजा और भी जला करता है ।''

बाबू साहब ने पत्नी को मौन देखकर कहा–''अब झेंपने से क्या लाभ । प्रेम को छिपाना व्यर्थ है । छिपाने की आवश्यकता भी नहीं ।''

रामेश्वरी जल–भुनकर बोली–''मुझे क्या पड़ी है, जो मैं प्रेम करूँगी ? तुम्हीं को मुबारक रहे । निगोड़े आप ही आकर घुसते हैं । एक घर में रहने में कभी–कभी हँसना बोलना पड़ता ही है । परसों जरा यों ही ढकेल दिया, उसपर तुमने सैकड़ों बातें सुनाईं । संकट में प्राण हैं, न यों चैन, न त्यों चैन।''

बाबू साहब को बड़ा क्रोध आया । उन्होंने कर्कश स्वर में कहा–''न जाने कैसे हृदय की स्त्री है ! अभी अच्छी–खासी बैठी बच्चों से प्यार कर रही थी । मेरे आते ही गिरगिट की तरह रंग बदलने लगी । ''

रामेश्वरी ने इसका कोई उत्तर न दिया । अपने क्षोभ तथा क्रोध को वे आँखों द्वारा निकालने लगीं । जैसे–जैसे बाबू रामजीदास का स्नेह दोनों बच्चों पर बढ़ता जाता था, वैसे–ही–वैसे रामेश्वरी के द्वेष और घृणा की मात्रा भी बढ़ती जाती थी । प्रायः बच्चों के पीछे पति–पत्नी में कहा सुनी हो जाती थी और रामेश्वरी को पति के कटु वचन सुनने पड़ते थे ।

इसी प्रकार कुछ दिन व्यतीत हुए । एक दिन नियमानुसार रामेश्वरी छत पर अकेली बैठी हुई थी । उनके हृदय में अनेक प्रकार के विचार आ

लेखनीय

निम्नलिखित विषय पर एक परिच्छेद लिखिए :
'डिजिटल भारतः एक पहल'

रहे थे । विचार और कुछ नहीं, अपनी निज की संतान का अभाव, पति का भाई की संतान के प्रति अनुराग आदि । कुछ देर बाद जब उनके विचार स्वयं उन्हीं को कष्टदायक प्रतीत होने लगे, तब वह अपना ध्यान दूसरी ओर लगाने के लिए टहलने लगीं ।

वह टहल ही रही थी कि मनोहर दौड़ता हुआ आया । मनोहर को देखकर उनकी भृकुटी चढ़ गई और वह छत की चहारदीवारी पर हाथ रखकर खड़ी हो गईं ।

संध्या का समय था । आकाश में रंग-बिरंगी पतंगें उड़ रहीं थीं । मनोहर कुछ देर तक खड़ा पतंगों को देखता और सोचता रहा कि कोई पतंग कटकर उसकी छत पर गिरे, क्या आनंद आए । देर तक गिरने की आशा करने बाद दौड़कर रामेश्वरी के पास आया और उनकी टाँगों में लिपटकर बोला-''ताई, हमें पतंग मँगा दो ।'' रामेश्वरी ने झिड़क कर कहा-''चल हट, अपने ताऊ से माँग जाकर ।''

मनोहर कुछ अप्रतिभ-सा होकर फिर आकाश की ओर ताकने लगा । थोड़ी देर बाद उससे फिर रहा न गया । इस बार उसने बड़े लाड़ से आकर अत्यंत करुण स्वर में कहा-''ताई मँगा दो, हम भी उड़ाएँगे ।''

इस बार उसकी भोली प्रार्थना से रामेश्वरी का कलेजा पसीज गया। वह कुछ देर तक उसकी और स्थिर दृष्टि से देखती रही । फिर उन्होंने एक लंबी साँस लेकर मन ही मन कहा यह मेरा पुत्र होता तो आज मुझसे बढ़कर भाग्यवान स्त्री संसार में दूसरी न होती । निगोड़ा मरा कितना सुंदर है, और कैसी प्यारी बातें करता है । यही जी चाहता की उठाकर छाती से लगा लें । यह सोचकर वह उसके सिर पर हाथ फेरने वाली थी कि इतने में उन्हें मौन देखकर बोला, ''तुम हमें पतंग नहीं मँगवा दोगी, तो ताऊ जी से कह देंगे।'' यद्यपि बच्चे की इस भोली बात में भी मधुरता थी, तथापि रामेश्वरी का मुँह क्रोध के मारे लाल हो गया । वह उसे झिड़क कर बोली- ''जा कह दे अपने ताऊ जी से देखें, वह मेरा क्या कर लेंगे ।''

मनोहर भयभीत होकर उनके पास से हट आया, और फिर सतृष्ण नेत्रों से आकाश में उड़ती हुई पतंगों को देखने लगा । इधर रामेश्वरी ने सोचा-यह सब ताऊ जी के दुलार का फल है कि बालिश्त भर का लड़का मुझे धमकाता है । ईश्वर करें, इस दुलार पर बिजली टूटे ।'' उसी समय आकाश से एक पतंग कटकर उसी छत की ओर आई और रामेश्वरी के ऊपर से होती हुई छज्जे की ओर गई । छत के चारों ओर चहारदीवारी थी । जहाँ रामेश्वरी खड़ी हुई थीं, केवल वहाँ पर एक द्वार था , जिससे छज्जे पर आ-जा सकते थे । रामेश्वरी उस द्वार से सटी हुई खड़ी थीं । मनोहर ने पतंग को छज्जे पर जाते देखा । पतंग पकड़ने के लिए वह दौड़कर छज्जे की ओर चला । रामेश्वरी खड़ी देखती रहीं । मनोहर उसके

आसपास

पक्षी अपने बच्चों की देखभाल किस तरह करते हैं, इसके बारे में अंतरजाल से जानकारी प्राप्त कीजिए ।

पास से होकर छज्जे पर चला गया, और उससे दो फिट की दूरी पर खड़ा होकर पतंग को देखने लगा । पतंग छज्जे पर से होती हुई नीचे घर के आँगन में जा गिरी । एक पैर छज्जे की मुँड़ेर पर रखकर मनोहर ने नीचे आँगन में झाँका और पतंग को आँगन में गिरते देख, वह प्रसन्नता के मारे फूला न समाया । वह नीचे जाने के लिए शीघ्रता से घूमा, परंतु घूमते समय मुँड़ेर पर से उसका पैर फिसल गया । वह नीचे की ओर चला । नीचे जाते-जाते उसके दोनों हाथों में मुँड़ेर आ गई । वह उसे पकड़कर लटक गया और रामेश्वरी की ओर देखकर चिल्लाया ''ताई !''

रामेश्वरी ने धड़कते हुए हृदय से इस घटना को देखा । उसके मन में आया कि अच्छा है, मरने दो, सदा का पाप कट जाएगा । यही सोच कर वह एक क्षण रुकी । इधर मनोहर के हाथ मुँड़ेर पर से फिसलने लगे । वह अत्यंत भय तथा करुण नेत्रों से रामेश्वरी की ओर देखकर चिल्लाया-''अरी ताई !'' रामेश्वरी की आँखें मनोहर की आँखों से जा मिलीं । मनोहर की वह करुण दृष्टि देखकर रामेश्वरी का कलेजा मुँह में आ गया । उन्होंने व्याकुल होकर मनोहर को पकड़ने के लिए अपना हाथ बढ़ाया । उनका हाथ मनोहर के हाथ तक पहुँचा ही कि मनोहर के हाथ से मुँड़ेर छूट गई, वह नीचे आ गिरा । रामेश्वरी चीख मार कर छज्जे पर गिर पड़ीं ।

रामेश्वरी एक सप्ताह तक बुखार से बेहोश पड़ी रहीं । कभी-कभी जोर से चिल्ला उठतीं, और कहतीं-''देखो-देखो, वह गिरा जा रहा है-उसे बचाओ, दौड़ो -मेरे मनोहर को बचा लो ।'' कभी वह कहतीं- ''बेटा मनोहर, मैंने तुझे नहीं बचाया । हाँ, हाँ, मैं चाहती तो बचा सकती थी-देर कर दी ।'' इसी प्रकार के प्रलाप वह किया करतीं ।

मनोहर की टाँग उखड़ गई थी, टाँग बिठा दी गई । वह क्रमशः फिर अपनी असली हालत पर आने लगा ।

एक सप्ताह बाद रामेश्वरी का ज्वर कम हुआ । अच्छी तरह होश आने पर उन्होंने पूछा-''मनोहर कैसा है ?''

रामजीदास ने उत्तर दिया-''अच्छा है ।''

रामेश्वरी-''उसे पास लाओ ।

मनोहर रामेश्वरी के पास लाया गया । रामेश्वरी ने उसे बड़े प्यार से हृदय से लगाया । आँखों से आँसुओं की झड़ी लग गई, हिचकियों से गला रुँध गया । रामेश्वरी कुछ दिनों बाद पूर्ण स्वस्थ हो गईं । अब वह मनोहर और उसकी बहन चुन्नी से द्वेष नहीं करतीं और मनोहर तो अब उसका प्राणाधार हो गया । उसके बिना उन्हें एक क्षण भी कल नहीं पड़ती ।

—०—

संभाषणीय

संयुक्त परिवार का महत्त्व बताते हुए अपने विचार कक्षा के सामने प्रस्तुत कीजिए ।

पाठ से आगे

'आपसी स्नेह संयुक्त परिवार की नींव है' इसपर अपने विचार स्पष्ट कीजिए ।

शब्द संसार

शुष्क (वि.) = सूखा, नीरस
तीक्ष्ण (वि.) = प्रखर, तीव्र
मुँड़ेर (स्त्री. सं.) = छत के किनारे की दीवार
छज्जा (पुं.सं.) = छत, छप्पर
प्रलाप (पुं.सं.) = पागलों की तरह कही हुई व्यर्थ की बातें

मुहावरे

गिरगिट की तरह रंग बदलना = स्वार्थ पूर्ति हेतु व्यवहार बदलना ।
कलेजा पसीजना = हृदय द्रवित होना ।
कलेजा मुँह में आना = लगभग जान निकलने की स्थिति में होना ।

पाठ के आँगन में

(१) सूचनानुसार कृतियाँ कीजिए :–

(क) कारण लिखिए :

१. मनोहर रेलगाड़ी में ताऊ जी को ले जाएगा .....

२. मनोहर रोने लगा ....

(ख) आकृति पूर्ण कीजिए :

(त) रामेश्वरी को दुख था – ☐

(थ) इससे नाम चलता है – ☐

(ग) संजाल :

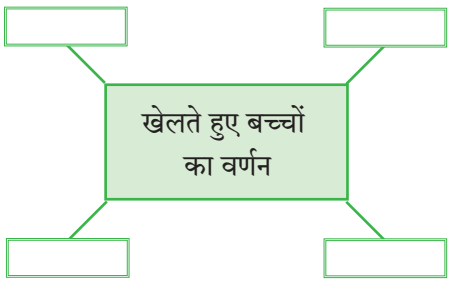

(घ) ताई के स्वभाव

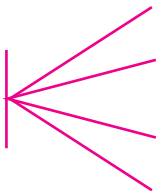

(छ) कहानी में आए संत साहित्यकार

१. _____ २. _____

(च) अर्थपूर्ण शब्द तैयार कीजिए :

(प) धाँ | द् | गि | अ | नी _____

(फ) ता | ष्ण | स | तृ _____

(२) पाठ में प्रयुक्त अव्ययों को ढूँढ़कर उनका भेदानुसार वर्गीकरण कीजिए । उनमें से किन्हीं चार का सार्थक वाक्य में प्रयोग कीजिए ।

(३) 'ताई की बदलती स्वाभाविक स्थिति' स्पष्ट कीजिए ।

रचना बोध

.....
.....
.....

भाषा बिंदु

(१) निर्देशानुसार संधि विच्छेद, संधि तथा उनका नामोल्लेख कीजिए :

क्र.	संधि	संधि विच्छेद	संधि का प्रकार
१.	सेवार्थ	..... + ...	
२.	.....	अभि + इष्ट	
३.	.....	नव + ऊढ़ा	
४.	ब्रह्मर्षि	..... + ...	
५.	.....	दंत + ओष्ठ	
६.	महौषधि	..... + ...	
७.	उपर्युक्त	..... + ...	
८.	.....	अनु + इति	
९.	.....	वाक् + जाल	
१०.	सन्मति	..... + ...	
११.	निर्विघ्न	..... + ...	
१२.	दुश्चक्र	..... + ...	
१३.	.....	निः + संतान	
१४.	.....	दुः + प्रकृति	
१५.	चतुष्पाद	..... + ...	

(२) परिच्छेद पढ़िए और उसमें आए शब्दों के लिंग एवं वचन बदलकर लिखिए ।

मैं गाँव से शहर पढ़ने आता था । गाँव का मेरा एक मित्र भी था । सावन-भादों की बादलों से ढँकी रात में बीहड़ पानी बरसता है । पूरा सन्नाटा शेर की दहाड़ सरीखा गरज उठता है । छमाक से बिजलियाँ कड़कती हैं । माँ बच्चे को अपने छाती से चिपकाती है । हाँड़ी में उबलते दाल-भात के साथ उसकी उम्मीद भी पकती है । उसका श्रम पकता है । अंत में कभी-कभी माँ हाँड़ी में चिपके मुट्ठी भर बचे चावल खाती है । न जाने कहाँ से अपनी आँखों में इतनी तेज चमक पैदा कर लेती है कि भरे पेटवाले की आँखें चौंधियाँ जाती हैं ।

उसके त्याग और संतान की तृप्ति के पानी से उसकी साध लहलहाती है । बैलगाड़ी में बैठी संतान को छतरी की छाँव करती है ।

बस में बच्चा खिड़की के पास बैठा बाहर दृश्यों को देखता है और वह पूरी यात्रा बच्चे को देखती रहती है । सँभालती रहती है । रेल जब बोगदे के भीतर से गुजरती है, तो अनायास उसका हाथ बच्चे की बाँह पर चला जाता है और पिता का सामान पर ।

(डॉ. श्रीराम परिहार, 'ठिठके पल पाँखरी पर' से साभार)